ISSN 2454-2911

सामयिक सरस्वती

शब्दों का उत्सव

जुलाई–सितम्बर 2017

अमेरिका में हिन्दी भाषा की स्थिति और अध्यापन

□ सोनिया तनेजा

सोनिया तनेजा

सोनिया तनेजा अमेरिका के स्टैंनफर्ड विश्वविद्यालय में हिन्दी की प्राध्यापिका हैं। वे अमेरिकियों और भारतीय-अमेरिकियों को हिन्दी भाषा सिखाती हैं। वे रक्षा संस्थान में हिन्दी की प्रोफेसर और बर्कले और कोलंबिया विश्वविद्यालय में हिन्दी की प्राध्यापिका भी रह चुकी हैं।

उन्होंने अमेरिका में हिन्दी भाषा में कई शहर, राज्य और संघीय स्तर की परीक्षाएं तैयार कीं और हिन्दी सीखने वालों के लिए पाठ्य पुस्तकों को प्रकाशित किया है।

ई-मेल: sonia7taneja@gmail.com

अमेरिका के विभिन्न राज्यों के विश्वविद्यालयों में हिन्दी का अध्यापन लगभग अस्सी के दशक में आरम्भ हुआ, हालांकि दक्षिण एशिया पर कुछ अंग्रेजी में पाठ्यक्रम पहले से चल रहे थे। अब बीस वर्ष उपरांत, अनेक प्रसिद्ध विश्वविद्यालयों में हिन्दी का अध्ययन हो रहा है, जैसे कि स्टैनफर्ड, यूसी बर्कले, यू सी डेविस, येल, राइस, यूटी ऑस्टिन, ड्यूक, यू एन सी चैपल हिल, मैडिसन विस्कॉन्सिन, जॉन्स हॉपकिंस, ब्राउन, कोलम्बिया, कॉर्नेल, सिरैक्यूज, प्रिंसटन, हार्वर्ड, शिकागो व बोस्टन।

किन्तु भारत के बाहर विश्वविद्यालयों में यह हिन्दी भाषा का अध्ययन भारत में हिन्दी पढ़ाये जाने से थोड़ा भिन्न है, चूंकि भारत से बाहर हिन्दी की कक्षाओं में विद्यार्थी न केवल भारतीय मूल के होते हैं, जो अमेरिका में या भारत के बाहर पले-बढ़े हैं, उनके साथ-साथ अनेक विदेशी मूल के विद्यार्थी भी होते हैं, जो हिन्दी सीखना चाहते हैं। हिन्दी सीखने वाले भारतीय मूल के विद्यार्थी अमेरिका में रहते हुए भी अपनी भारतीय संस्कृति को निकटता से समझना चाहते हैं, अपने भारत में रहनेवाले सम्बन्धियों से हिन्दी में संवाद करना चाहते हैं, भारत को जानना चाहते हैं व हिन्दी फिल्में और संगीत का आनन्द उठाना चाहते हैं। इन विद्यार्थियों ने कुछ हिन्दी पहले से सुनी होती है, परन्तु बोलना, लिखना व पढ़ना कक्षा में सीखना होता है। विदेशी विद्यार्थियों को सभी हिन्दी भाषा के कौशल हिन्दी कक्षा में सीखने होते हैं। वे भी भारत को देखना, सुनना, समझना और महसूस करना चाहते हैं, वहां शोध व भ्रमण करना चाहते हैं। उनकी रुचि भारत के भोजन, आध्यात्मिकता, अर्थशास्त्र और संस्कृति में होती है।

इस विद्यार्थियों के अन्तर से व अमेरिका में शिक्षण की शैली से यह स्पष्ट है कि हिन्दी भाषा के शिक्षण की शैली व हिन्दी शब्दावली, बोलचाल, सुनना, समझना, व्याकरण, संस्कृति व लेखन—सब कुछ हिन्दी के छात्रों की विभिन्न आवश्यकताओं के अनुरूप होना चाहिए, जिसे हिन्दी की एक विदेशी भाषा के रूप में शिक्षण कहा जाता है। यहां कुछ संस्थाएं जैसे एसीटीएफएल (ACTFL) व स्टारटाक (STARTALK) और कुछ विश्वविद्यालय हिन्दी के लिए भाषा शिक्षकों को प्रशिक्षित करते हैं और मौखिक व लिखित भाषा के परीक्षण के लिए प्रशिक्षण प्रदान करते हैं। यह क्षेत्र बढ़ रहा है। अब टैक्सास, न्यूयार्क व न्यू जर्सी में कुछ उच्चविद्यालयों में भी हिन्दी सिखाई जाने लगी है। कुछ स्थानीय सामुदायिक संगठन और बच्चों के स्कूल के बाद के कार्यक्रम भी हैं, जो छोटे बच्चों को हिन्दी सिखाते हैं। 1996 में जब मेरी रुचि हिन्दी पढ़ाने में आरम्भ हुई थी, तो अमेरिका के विश्वविद्यालयों में बहुत कम अध्यापक, लगभग 15, इस क्षेत्र में थे।

कुछ मेरे हिन्दी अध्यापन के बारे में

मेरा जन्म भारत में हुआ व कई वर्षों तक एक बड़े भारतीय परिवार में परवरिश हुई। अमेरिका में न्यूयार्क में आने पर, उच्चविद्यालय में अमेरिकी समाज व संस्कृति की भी

व्यक्तिगत रूप से जानकारी प्राप्त हुई। हिन्दी पढ़ाने में मेरी रुचि कोलम्बिया विश्वविद्यालय से प्रारम्भ हुई। बी.ए. करते हुए मैंने प्रसिद्ध लेखिका व प्रोफेसर सुषम बेदी से हिन्दी भाषा व साहित्य के उच्च स्तर के पाठ्यक्रम लिए। चूंकि मेरा शिक्षा व अध्यापन के क्षेत्र की ओर आकर्षण हुआ तो मैंने एम.ए., एम.एड. भी कोलम्बिया विश्वविद्यालय से किया। उसके बाद कुछ वर्षों तक मैं कोलम्बिया विश्वविद्यालय में हिन्दी की प्राध्यापिका रही।

इस दौरान मैंने न्यूयार्क के उच्च विद्यालय के भारतीय विद्यार्थियों के लिए एक सर्वप्रथम हिन्दी रीजेन्ट्स की परीक्षा बनायी ताकि भारतीय मूल के विद्यार्थियों को न्यूयार्क के इतिहास में पहली बार हिन्दी एक भाषा के रूप में पास करने का अवसर मिले। ये विद्यार्थी यह प्रमाण दे सकें कि वे हिन्दी भाषा जानते हैं। इससे इन्हें आगे चलकर कालेज की पढ़ाई पूरी करने में भी मदद होती है।

विवाह के प्रश्चात् जब मैं कैलिफोर्निया आयी तो अमेरिका के रक्षा विभाग में हिन्दी की प्रोफेसर रही। मैंने हिन्दी के नये विद्यार्थियों के लिए अमेरिका में एक किताब प्रकाशित की, अनेक हिन्दी भाषा से सम्बन्धित भाषण दिए और कैलिफोर्निया राज्य के स्तर पर हिन्दी भाषा के अध्यापकों के लिए एक सर्वप्रथम प्रमाणीकरण परीक्षा बनाई ताकि हिन्दी का अध्यापन यहां के उच्चविद्यालयों में भी हो सके। अब मैं स्टैन्फर्ड में हिन्दी की प्राध्यापिका हूं।

हिन्दी की एक विदेशी भाषा के रूप में मेरा शिक्षण दर्शन

एक सकारात्मक सोच, छात्रों की भिन्न-भिन्न आवश्यकताओं का मूल्यांकन करना, उनकी आवश्यकताओं, रुचियों व लक्ष्यों को प्रमुखता देना, अनुकूल पाठ्य सामग्री एकत्रित करना व उन्हें निरन्तर बोलने, लिखने, पढ़ने व सुनने का अभ्यास प्रदान करना मेरी शिक्षण शैली के कुछेक अनुभव हैं, जो मेरे विद्यार्थियों को उनके लक्ष्य प्राप्ति कराने में सहायक रहे हैं।

यद्यपि नयी भाषा सीखने आये हुए विद्यार्थियों का मुख्य लक्ष्य भाषा सीखना ही होता है, तथापि देशी एवं विदेशी भाषा जिज्ञासुओं को पढ़ाते हुए मैंने यह अनुभव किया है कि प्रत्येक जिज्ञासु की भाषा सीखने की एक व्यक्तिगत शैली होती है चाहे वह मुख्यतः किसी भी प्रकार की हो, दृश्यात्मक, श्रवणात्मक अथवा वार्तालाप। प्रत्येक विद्यार्थी का एक निजी विशेष लक्ष्य एवं रुचि भेद भी होता है। भाषा से उनका सम्बन्ध, प्रवीणता का स्तर, शैक्षणिक एवं व्यक्तिगत रुचि, इन सब का योगदान रहता है। अतः इन सभी बातों को ध्यान में रखते हुए मैं सर्वप्रथम उन्हें अनौपचारिक मूल्यांकन देती हूं, जो कि उनका भाषायी स्तर जानने में सहायता करता है। विद्यार्थियों की भाषायी आवश्यकता जानना मेरे लिए अत्यंत महत्त्वपूर्ण होता है, क्योंकि यही कारक मुझे विद्यार्थियों की भिन्न-भिन्न भाषायी आवश्यकताओं की पूर्ति हेतु व्यवस्थित एवं प्रभावशाली भाषा शिक्षा के विभिन्न तरीकों को कार्यान्वित करने में सक्षम बनाते हैं तथा सम्बन्धित एवं अनुकूल शिक्षण सामग्री का चयन व संसाधनों को विकसित करने में सहायक सिद्ध होते हैं।

मेरा प्राथमिक शिक्षण दृष्टिकोण भाषा जिज्ञासुओं को वार्तालाप की भाषा में निपुणता, सुनकर समझने की कला, पढ़ना, लिखना, शब्दार्थ एवं व्याकरण का ज्ञान प्रदान करना होता है ताकि उन्हें बोलने, लिखने एवं समझने का ज्ञान प्राप्त हो सके। इस लक्ष्य की प्राप्ति हेतु मैं उनकी भाषायी आवश्यकताओं की पूर्ति के लिए विभिन्न प्रकार की पाठ्य सहायक सामग्री का चुनाव एवं प्रयोग करती हूं जैसे मल्टीमीडिया संसाधन, वीडियो, हिन्दी समाचार, हिन्दी वेबसाइट से लेख, कहानियां व हिन्दी गीत। विद्यार्थी इन सभी के प्रयोग से बोलकर, सुनकर और लिखकर हिन्दी भाषा को समझने का कौशल प्राप्त करते हैं। भाषा के प्रति उनका आत्मविश्वास बढ़ता है। विद्यार्थी जब हिन्दी भाषा में कहानी व गीत सुनकर दिए गये रिक्त स्थानों की पूर्ति करते हुए हिन्दी सीखने का अभ्यास करते हैं तो उनकी भाषा केन्द्रित रुचि और अभ्यास को बढ़ावा मिलता है। इसके अतिरिक्त, जब मैं कक्षा में पढ़ने एवं लिखित वार्तालाप की सहायक सामग्री का प्रयोग करती हूं तो यह कार्य शैली मेरे विद्यार्थियों को उनके उद्देश्यपूर्ण, कार्यात्मक अभ्यास की ओर अग्रसर करती है एवं उन्हें भाषा सीखने की चिन्ता से बचाती है। विद्यार्थियों की उपरिलिखित विभिन्न भाषा आवश्यकताओं को लक्ष्य में रखते हुए ही मैंने अपनी पुस्तक Practice Makes Perfect: Basic Hindi (McGrow-Hill 2012) में पाठ्य सामग्री बनाने का प्रयास किया है।

इसके अतिरिक्त मैं अपने विद्यार्थियों को भाषायी प्रवीणता दिलाने के लिए उन्हें विभिन्न प्रायोगिक अवसर प्रदान करती हूं जैसे वास्तविक जीवन स्थिति में बोलना एवं सुनना, हिन्दी समुदाय में भोजन, वस्त्रों के नाम, देशी लोगों से बातचीत करना आदि।

एक बात यह भी है कि मैं सदैव कक्षा में सकारात्मक माहौल बनाये रखती हूं। मेरी यह शिक्षण शैली मेरे विद्यार्थियों को सकारात्मक वातावरण में निःसंकोच होकर बोलने, सुनने, पढ़ने व लिखने का अभ्यास प्रदान करती है। भाषा सीखने और सिखाने के लिए ऐसा माहौल छात्रों को उनके लक्ष्य प्राप्ति में सहायक सिद्ध होता है, अतः अत्यंत एक महत्त्वपूर्ण हिस्सा होता है।

मैं अपने विद्यार्थियों की उन्नति के लिए उन्हें लिखित गृहकार्य देना, वार्तालाप में भाग लेना, लिखने-पढ़ने का समुचित अवसर प्रदान करना एवं उनकी रुचि, आवश्यकता व लक्ष्य प्राप्ति में उनकी सफलता को ध्यान में रखते हुए उनके लिए पठन-पाठन सामग्री, संसाधन, अवसर

और प्रयोग की सुव्यवस्थित शिक्षण शैली योजना तैयार करती हूं, क्योंकि उनकी सफलता का मापदंड ही मेरी सफलता होगी, ऐसा मैं अनुभव करती हूं। मैं अपने विद्यार्थियों को भाषायी ज्ञान प्रयोगात्मक स्तर पर प्रदान करने का भरसक प्रयास करती हूं। मैं अपनी शिक्षण शैली एवं सीखने की शैली को निरन्तर विकसित करने में प्रयासरत रहती हूं ताकि मैं अपने और विद्यार्थियों के लक्ष्य प्राप्त करने का एक सफल साधन बन सकूं।

वर्तमान स्थिति

हालांकि अमेरिका में हिन्दी पढ़ाने का क्षेत्र बढ़ रहा है, फिर भी एक पेशे के रूप में हिन्दी का अध्यापन करनेवाले लोगों की संख्या तुलनात्मक रूप से कम ही है। इसका एक कारण यह है कि यह पेशा आर्थिक रूप से मजबूत नहीं दिखाई पड़ता, विशेष रूप से उन प्रवासियों को, जो अपनी आर्थिक स्थिति सुधारने के लिए अमेरिका आते हैं या फिर उनको भी, जो यहां पैदा हुए। हिन्दी शिक्षण सामग्री विकसित करने या विभिन तरीकों से हिन्दी को आगे बढ़ाने के लिए भी बहुत कम वित्तीय सहायता उपलब्ध है, जो कि पर्याप्त नहीं। इसके अतिरिक्त, इस समय अमेरिका के उच्च विद्यालयों व विश्वविद्यालयों में हिन्दी पढ़ाने के उतने अवसर हैं भी नहीं, जितने कि होने चाहिए।

किन्तु, कुछ मेरे जैसे लोग भी हैं, जिनको हिन्दी भाषा से एक विशेष प्रेम है। तभी तो, अपनी शिक्षा का अधिकांश हिस्सा अमेरिका में प्राप्त करने के बावजूद, मैंने यह पेश चुना, जिसमें मैं हिन्दी भाषा की सेवा करने में समर्थ हो पाऊं। कई वर्षों के बाद, आज ऐसा महसूस हो रहा है कि शायद मैं उन दुर्लभ, मुट्ठी-भर युवा भारतीय-अमेरिकी लोगों में से हूं, जो भारत की गंगा और अमेरिका की मिस्सीसिप्पी के मध्य में एक सरस्वती के दूत के रूप में विश्वविद्यालय में हिन्दी पढ़ा रहे हैं।

ई-मेलः sonia7taneja@gmail.com

सामयिक प्रकाशन द्वारा प्रकाशित